

धर्मरत्न वज्राचार्य मुरत श्री महाविहार

H-17

हिममतमानानिसदाज्ञोगातिज्ञोगातिज्ञोगमस्याः निधरनिलोकत्रिपदादसेवाश्रुत्
करतहितापदषात्रयजुच्चरतिः श्रीतमेकालिका मातु कल्याणकर नि॥५॥ ब्रह्मा
सिवासि विसनकादिमुनि वज्रपैश्याकि ॥६॥ ब्रह्मादुभरिपु रीधरतिमगवा म न तेति
मैज्ञोतिमासिघसदाभक्तज्ञतपालमवदुर्गतिरतिः श्रीतमेकालिका मातु क
कर नि॥६॥ इति कालिकाश्रुत्सोत्रं संपूर्णं समाप्तं सुभम् ॥६॥ श्री गुरु नारायण
वंसंते वासतिकुसुमसुकुमा ॥ वैयवै भूमतिकीर्तयौ शीरज्ञति विज्ञप्ति ॥
यावलं वाधाराधावहुवृतसुवेसहवति ॥१॥ दिवातके फिता श्री
वीतभादेव्यतापवैतापरिनिद्रिततद्वेदितात्तज्ञो विज्ञप्ति ॥

मसर्वदेव मुनि संतत्रे म न दुदैवेन दुराधि र विज्ञप्ति वैद ॥ १॥ त्रि
स्वस्ति श्री गते सायन्नमः कासि का पुरा विज्ञप्ति वैद ॥ २॥
देवराज्ञसेव्यमातपावनाधिपंकज्ञ बालयज्ञसुत्रादि
करं ॥ नारादंदिद्योगवद्वेदितं दिगवरं ॥ कासिका ॥१॥
करं भवद्वितारकं प रं निलकं ६ मिप्स ताथं दायकं त्रिभुवनं ॥ का
मका त्वं म वृत्ता तास्य कृतं तदा मः कासिका ॥१॥ मुक्तिमुक्तिदा
य कं पुनर्वाह विग्रहं तितं भक्तवद्वलं म स म स लोक विग्रहं म
मिषलं म नो ज्ञ हे मं किं कि तिल स कं ६ः कासिका पुरा ॥३॥

सुलं कपासदं दुया वि मा दिका २ ॥ सा मका ज मा दि दे वम द
र नि रम य ॥ मि म वि क्र म भि ये वि वि त्र ता उ व प्रियः का सि का
॥ ४ ॥ १ ॥ द्या दु का प्र भा मि र म या द यु म कं नित्य म दि ति य
मि ह दे व तं ति र त नि ॥ म पु द र्य ना स न क राल द व भा य नः का सि का
॥ ५ ॥ ध र्म से तु पा ल नं व ध र्म मा र्ग ना स वं ॥ क र्म पा स मा द
कं सु स र्म दाय कं वि भु ॥ स र्म व र्म के स या स से मि तां म ड तं व
सि का ॥ ६ ॥ अ द हा स मि श्र क र्म ता उ को टि म रि य तं ॥ द द्दि य
द पा प शाल मु ज सा स न म ॥ अ ह सि धि दा तं क पा ल म

का वलं : का सि का ॥ ७ ॥ अ न स द्य ना य कं वि सा र नि ति सा त्त
का सि वा सि ला क पु य या शो ध क पु भु नि ति मा र्ग को वि द
न श म ल्य ति : का सि का ॥ ८ ॥ का ल भै र व कं प ठ ति य म ना ह
या न द धि सा ध न पु स सा पु य व र्ध नं ॥ मो क मो ह दे य लो भ न
य ना य ना स र्म या ति सि धि का ल भै र वां वी स नि धि कृ वं ॥ का सि का
पु रा धि ना य का ल भै र वं म र्म त्रे त ॥ इ ति श्री का ल भै र व शु क कं प्र सी तं
स मा प्र सु भ म् ॥

स्वस्ति श्री गने सायन मः नित्या नन्द करिवरा मय करिः सौ दय रत्ना
करिनि धृता विल बो र पावन मय करि ॥ प्रात दे मा हे स्व रि प्रा ले या व
न पा न करि का सि पुरा धे स्व रिः मि क्षा दे हि कृ पा विल म न करि माता
श्रु पुरा ने स्व रि ॥ १॥ ना ना सा स्त्र वि सा स्त्र पु र्ष न करि हे मे व रा ड स्व रि
मु क्तो हार विल म मा न पु ग लि व द्या य कुं भा ड रि ॥ का
रु वा सि ता रु व करि का सि पुरा धे स्व रिः मि क्षा दे हि कृ पा विल

न करि माता श्रु पुरा ने स्व रि ॥ २॥ जो गा न द क रि नि पु र्ष न
ध शौ क रि ष्टा करिः व द्रा क रि ग रा मा न ल ह रि नो र्वा व रा
करि स वै स्व या त व पर ल करि का । त पुरा धे स्व रि मि क्षा दे हि कृ पा
विल म न करि माता श्रु पुरा ने स्व रि ॥ ३॥ कै व र कं दार न करि
गो रि ष्टा स क रि को मा रि वि ग मा त गो व करि क रि ष्ट का रा व
सो रि ष्टा द्या दार क पा ट पा प ना ॥ करि का सि पुरा धे स्व रि मि
क्षा दे हि कृ पा विल म न करि माता श्रु पुरा ने स्व रि ॥ ४॥

वृष्णा भा दिस प्रभुत पाप न करि वा स्नातु मो डोड रि लिला ना उ का सह
बदन करि ना नि विने स्व रि श्री विस्वा भूत प्रबोधन करि का सि पु
रा धै स्व रि मि दसा देहि कृपा कि म मा ग न्धु व करि मा ता शु भ पु रा ने
स्व रि ॥ ५ ॥ सु भ म्

स्व लि श्री ग ने सा धन मः उ मां गं ग तं क र व कं ग ने स न्धु
गं सो मि त धु प्र के रु ग ने सा र पु क्त फ ला सो मि वं तं न नो ज
न रु पं ग ने स न म स्ते ॥ १ ॥ ग ने सै दं तं स मं स र्व का र्थी सि न त
मु ष ना न दं स र्व सि धि ॥ न म स्वी ति त का र्थी सि धि भ व ति न मा बु दि
का तं ग ने स न म स्ते ॥ २ ॥

ॐ नमः गगनपतये नमः ब्रह्मपरमेश्वराय नमः महेश्वराय नमः
 भगवते नमः सरसोते नमः गुरुभे नमः लक्ष्मिभ्यो नमः श्रीगुरु
 ध्यायेत् नमः अथ आत्माहृदया ले संघा का दे कता को नाथ वि
 स्तु नारायण हारुद्र महेश्वरः भगवानिरीषि वरुण देव
 मय देः अथ वरुण देः श्रोतिरव अष्टार पुरातनः सास्त्र

परमेश्वर नारायण त्रैलोक्यपाल भगवानिरीषि पति धाना धिपति
 देवगालित क्रादय पावान्स पुरिखेस्वरः वस्तुधरा भूमिधरा
 विगाय त्रिस्ता वित्रि सरसोतिः लक्ष्मि परमेश्वर नारायण
 गुरु नारायण शिख नारायण इवां गुरु नारायण भगवान् ~~भगवान्~~ भगवान्
~~भगवान्~~ भगवान् भगवान् भगवान् भगवान् भगवान् भगवान् भगवान्
 नारायणः वां आति दे विनि न कं वाना निल कं वुन निल कं

६ धर्मकोषरिः माहादेव ^{स्वर} कोषरिः सपनातिर्थका धेनुमनि वर
सैलिगे स्वरः कागे स्वरः वागे स्वरः सैलिगे स्वरः दुम्रे स्वरः प्रकुदे
स्वरः गो कुले स्वरः गो घुरे गो लिगे स्वरः ठै लिगे स्वरः जेठे स्वरः ना
ठे स्वरः टंके स्वरः कुं मे स्वरः सुं मे स्वरः वि जे स्वरः कंके सोर
पुन्य म ते स्वरः इडल लाठे स्वरः वौधे स्वरः अंत लिगे स्वरः त
स्वरः वर षंठे स्वरः सोम लिगे स्वरः सिपागा मे स्वरः रि

ने सुलांगे स्वरः
श्री ^{स्वर} स्वरः सूर्य विना लिषे स्वरः स्ववर्ने सोरः मंगले स्वरः
रिः धने सोरः आसापूरे स्वरः इडे स्वरः संषे स्वरः ज्ञागे स्वरः किता
रै विकठे स्वरः देववाठे स्वरः माहा वाठे स्वरः वेलवारे स्वरः म हासे
स्वरः नं षे ले स्वरः गो कार ने स्वरः किले स्वरः नदके सरे स्वरः कोठे स्
रः वा ने स्वरः लठु के स्वरः पिंठे स्वरः जाले स्वरः भले स्वरः फटि के स्वरः
रजु मले सोरः डिले स्वरः माहा मारे स्वरः काणिगे स्वरः दणवा
हने स्वरः जल मे स्वरः वधरा ज वरु रा ज तिति कोठि पर मे स्वरः नाराय

मि वि सातपविंद वासिनि त्रयत्रय ज्ञापय त्रय वै त नाथ मु। कनाथ
दिनाथ भो लानाथः आदिनाथ सि भुनाथः गो र भनत्वा प्रेनना
थः प्रसिद्ध नाथः पर प्रेसरना सं नः श्री द्वर का श्री किस्न वटे कि
लः कल्या नतिल ति क्रान्तो डवल भूट कुवेर नाथ व माधव व
सुदेवनन्द उ वः के स व गो विन्द भग वा वा सुदेव त ना त्र न ह रि
भुइसर ना रा मा स दे व स दा सि वा स व लिंगः मा लिका थ

कुद मुरारिः हरि द्वार सं प्र उ धार त प्र पा रु का कु र त्रै त्र वा ली हा
त्र मु क्ति त्रे त्रः प्र भा त्रे त्र सि भू त्रे त्र से त वं ध रा मे त्व रः त म व
न छो म नः रु द्र मा नः गो गो सा ग रः क पिल म नि इ इ इ मु ना
मा क डे मो रु द धि भा गिर नि के दार व डी के दारः मा न सर व रे स
रः का सि रे सार दा दे वि सा त स मु द्र उ र मा व ला श्रु त्त या व ल
हि मा न वः वि द्या व ल स मे रु ण र व ते स्वर ना रा नः वा यु म अ मे

वंद प्रकृत

स्वर ५

वमडलताममडलःप्रादित्यवंदूमाभौप्रबुधवहस्यतिसुक्र
तनित्वरगहकेतुनवग्रहपरप्रस्वरनारांनःप्रहधामपुत्रा
विंद्रावनेस्वरयमलोकब्रह्मलोकविलुल्लोकसुद्रलोकप्र
मरापुरेस्वरवैकुण्ठस्वरःकौलासेस्वरःनैडविष्णारनेस्वरःसुं
माहाविनेस्वरवजारेस्वरहसिनापुरैकांतेस्वरःप्रदुर्निगम
तिःदहभागासरस्वतिःकावेनि कस्मिदेनिगंगाजना

रिःप्र~~व~~वतिर्धप्रथकाप्यापंचपोषाःश्रीसुर्वकुं^{गोलाकंर}
कुंडप्रैरुंकुंडःसास्वतिकुंडःत्रिसुलमंगगाजमुनावृठिगगा
सेतिगंगाकालिगंगासालसुलमंगगासालिकंरापेदे
आसरुदःप्रथद्युनिर्मदासाहानदिमेनवतिःकाग
प्रतिसालप्रतिहनप्रतिमनप्रतिविलुप्रतिकं
कनाप्रतिःवंद्राप्रतिसुर्ववतिडुकोसितामाकोसि

हु न को सिः को सि का हो ल स मुद्र पार्स मुद्र द्वि स मुद्र
गंगा सा गरु हो ला गिरि त्रि ल सि द्य मो दरः गंगा ग्राध
प्रा ग माध व का सि वि से स्वरः काल और वटे को और व
दधि न कालिः दे उ पा नि वै तर नि म नि का नि का गंगा
शु न पु न तु नी वा नार से स्वरः धर्म पु वि वि द सार व इ इ हि

गो ला प्र हे रि नर सिं ह पर मे स्वर ना रा न न कु प्र उ म
ने ह म कु म र प वा हा रु प प्र स रा म रु प श्री कि लित म वोध
रु म का लि का वि लु मा हा मा पर मे स्वर ना रा नः सर व व
क ध नु प धा रि उ म्मा ष ष ड ष ला ग ल ग ड ल र र इ इ इ आ
नि दु र र र न उ ला ष ता रा श्रु को स वा नि षे व मु वा म्मा प
र मे स्वर ना रा नः स ल म्मा दा पर क लि व ड ड गे स्वर ध

विष्णुः शिवः ब्रह्माः त्रिमूर्तिः ॥ १ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ ३ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ ४ ॥
 द्रुपद उवाच ॥ ५ ॥
 भीमार्जुनसंवादे ॥ ६ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ ७ ॥
 कृष्ण उवाच ॥ ८ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ ९ ॥
 कृष्ण उवाच ॥ १० ॥
 अर्जुन उवाच ॥ ११ ॥
 कृष्ण उवाच ॥ १२ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ १३ ॥
 कृष्ण उवाच ॥ १४ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ १५ ॥
 कृष्ण उवाच ॥ १६ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ १७ ॥
 कृष्ण उवाच ॥ १८ ॥
 अर्जुन उवाच ॥ १९ ॥
 कृष्ण उवाच ॥ २० ॥

पिशाचसुखं लब्धवान्नेस्वरः तन्मयः स्वः
 अर्द्धातिगोमतिर्वंद्यमागातिरमातिः कावेति कुं सवेति गगातिः
 नाजोदावतिपंववितिर्त्यपंवकात्यापंवपोबनपिष्टीमुपेक्षुडगोसाइकुड
 अर्द्धातिगुडः भौरेकुडसरसति कुडः त्रिभुजगंगासमुनादुहिगंगातिः
 गंगाकातिगंगास्यात्मुल्लगंगाः वेत्रावतिसालिहारा मेः देभासरहृष्टप्रधन
 मेदाभाहृतदिमेतवतिवगमतिस्यात्समतिहृतमतिमनमतिः वि
 ल्लमतिकं कंतावतिवंप्रवतिः हृयीवतिः दुर्दकोसिहृन्कोसितामाको
 सि कोसिकाहोत्समुद्रपातमुद्रद्विमुद्रः गंगासागरहोलागिरिह
 प्रसगमहप ७

नसिदाभोदरगजागजाधरप्रागमाधवकासिविहस्वरः कालभार
 वाठकाभौरवः दंडपावि वैतर्तिमतिकर्तिकायं गाअनृपनीवानारसेस्व
 रः धर्मपुषिठिरदसरथइद्रहिगोलाः अहरेरिनरसिहपरमेस्वरनागरह॥
 नरकुलअर्द्धमहेरुपकुमीरुपः वाराहारुपः श्रीकुलरुपबोधरुपः का
 लिकाविल्लमासात्मापरमेस्वरनागरहः सष वक्रधनुकधारिः उल्लम
 षषद्रुगगागलगादुलगाताइद्रद्रुगानिद्रद्रुहः लोलाषातारा अक
 मवातिपंववंप्रवोत्मापरमेस्वरनागरहः सप विनाहारा

लिव तुये गेस्वर धर्म कर्म तिर्थव्रतस्तुतिपाठः जयपत्रं
हस्तमन्त्रपरमेश्वरनामः श्रीवाजमैत्रं पवलिभैरवाजद्वारक
गवादिनिः शुभुडिमाडुकला छुदेविः पताल वलि कालिना गफरि
सैसफरिः वासुकिना गेसोरप्रस्वय विदेसोरकर पवि केस्वर ह ग
माता गौ गपाकीः सत्यमवा निः सत्यसिता दुपदा देवका कुता सुगिता मो
हनिभद्रकालिका सायनिता राय निवंद्रितयवा गेस्वरिः इ ज जि उ
अवानिः मनमैत्रु मा वि गगनराज स्वः गुप्ते सोरिः कुसा निवले नु

माता दुर्गा वामा निवद्रु सो गितिसार दा देविः कुलवोकि अवानि
कुसा देवि द्वारका मि ति वद्रु अमानिः जयम गवतिः जाल पा कालि
कामा लिकाः भैरवि सितला वदुला मरुता मना सो गि इद्रपताल वा
सुकि मा नेमा तधाता गेदु वदि भुम्प तका सति पदो भुम्प देवि
देउ गालिः तिर्थराज व्रतराजः प्रतपुर्ता श्री ह पुर्ता वाराहा मन्त्र न ह
रासि गोग वारमासः कर्म मास कर्म तिर्थ संध्या प्रात दिन रात्रि
पदु रसदि गपाले स्वरः भ गेस्वरः प्रवृत्ते सोर वो मारता

समाधिद्वयेव कृतं नामः नेपाले स्वरसिध्दपत्रे मे तोर नागव
इति श्रीतिरुर्थी वलिविरावितंतं पुर्नं समा प्रमु अ म पु धा शु सु धो वा
म म दो षो तदि यते सु म म ॥ गतपति वदेवं विवराज विनायकं देवि व
माहाते जमहावलपराक्रम मो इरमाहा काय मे कदेतं गतातनं ॥ सेतवरात
माहादिपुत्रि नेत्रं गत एव क ॥ देवि पुत्रमाहाते जामाहावलपराक्रमं ॥ मो इर
माहा काय मे कदेतं गतातनं शुद्धे माहासुदेतं वदद्विरेकारसखी तं पसु मे
द कपात्रववामहस्तारि ना ए ना पुषा तं ना ए गंधा ठा ने पते म क्था सम

स्वस्ति श्री गतसाय नमः श्री लक्ष्मि मिध मे सं वा दे लि षे तेः श्री सारदा
य नमः यतो सत्यं ततो लक्ष्मि यतो लक्ष्मी ततो हरिः यतो हरि ततो ध
र्मः यतो धर्म ततो जयः यत्त्व मत्या को कुः सत्य मत्या का ठा उ मा ल
क्ष्मि वक्ष्मि वक्ष्मि तः जामा लक्ष्मि वास ग द्वि वा हा क स व र्ण त ॥
जहा क स व र्ण ता हा धर्म व र्ण तः जामा धर्म व र्ण ता हा जय
माः धर्मो वा ॥ धर्म ले लक्ष्मि मिधियति विविग माः हे व दिव
मो स वै व म ल ष्य मे वा पु रा ग कु र ॥ स वै विवा म क्था ग द

तिमनुष्यधनाप्रदुक्तः को हि मनुष्यकं गालहृदयं कति
तिमिभो इत्युतः यति धर्मलेखदि मिथाइ विमिगमा ॥ श्री
उवाच ॥ तं वलदिमिप्राज्ञा गदि मइत ॥ हे धर्ममतिमिथाइ विमि
गरेर उजाउलाः सुन्दरवरः मकनवासदिनुतदिप्रसिन्ननकाहा
ह ॥ क्याहाभयादिः प्रसिन्ननकोश्रुतेहे नमकहकु सुन्दरवर
रोप्रश्न प्रिप्रसुविः प्रोप्रसिन्नवं वलः प्रोप्रसिन्नकर्मसाक लह पृथ ॥
प्रोप्रसिन्नप्राज्ञावाज्ञाप्र प्रिप्रसिन्नकर्म तिसयावि ॥ प्रोप्रसिन्नप्र

लसि ॥ प्रोप्रसिन्नप्रतिप्राज्ञादिः प्रोप्रसिन्नप्रतिकमना ॥
प्रोप्रसिन्नप्रालस्य ॥ येतिथोक प्रसिन्ननकालहेहृद ॥ वकाव्याकोथक
नाककोसिजान ॥ मितामालिपिराक्यावरवहारस्य ॥ किं सिगरकसि
गरकुतामालादराष ॥ पोषियाकोठोरियाकोसह्यारनगपी
मुहोबोषेनहेरस्य ॥ सिलसोभावतमयाकिआगमाहमयलवर
कुविल ॥ गतिराष ॥ हृषोकेसपिस्तोरिराषत्यपरियार
आइतषाइआपुलेनुकिषात्य ॥ वातापिनसवाइनजाविषा

समावभया किञ्चित्त्रितन का वा वल्लिन ॥ भुतप्रेतवास गच्छन् ॥ यत्त
न नले रातदितकमायाप नि श्रुतपाति बहुतद्रायाप नि युयाकोमात्रे
कुतकसो भव्य देषि तस्मै तताया कोहा डिमाहा ~~पा नि गव्या तत्ता~~
श्रुतपाति हरे इजा नकु ॥ भुतप्रेत पाइ जा नकु ॥ यति श्रीलक्ष्मि धर्म स
वाहो ना मप्रथ मोध्याय ॥ श्रीलक्ष्मि उवाच ॥ लक्ष्मि ले धम था इ श्रा
ज्जगदि भइत श्रित्ति तन को लके त मकर दु सुत्युह वस ॥ तो प्रसिद्धि
तल व व त तो प्रसिद्धि साव ति तो प्रसिद्धि तो अलसि नि तो अश्रि अलप अ

हारि तो अश्रि सित व ति तो अश्रि गं मि र यो अश्रि सु वि तो अश्रि अतिका
मना तो अश्रि कल हत गर पा ॥ तो अश्रि सु व र तो अश्रि द द्या व तं य ति यो
क अश्रि तन का ल दे न हु तः अश्रि तन ले य क प ह र रा त द्ध म द्या उ ड नु
वा हे र रा नु त क या अश्रि त ग र हः न स क्य हा त पा उ मु ष पु न्दु सु वि हु त
मित र वा हे र व दार नु व र लि प ड के पा ल को र नु सि द्द रा ला व नु त व दे वा र्च न के
सा र दा म ग र नु त व प रि यार क न र व हः त्रिका नु त व आ फ र ड स्वा मि सो
ग र्दु व ल्ल कु वि ल आ ग मा म य ल न ग रि रा नु सु व र ह त व र द

साङ्ग राषः पही ले परिचारस्वमि लाइ छायापटि आ फले

पुनः स्वामि सावता जसो मानि राषः यति अति जतन का धरि मी

अने कवन अने कइय अने कय सपा निः अने करुप अने कसिप अने क

सपने कपूताप अने कउत हो लोः मित स्वाहे र भरि पुन हो ला धन दे हे के

नेरुपा आ विन ॥ यति श्री लक्ष्मि धर्म सेवा दो नाम दुति यो ध्याय ॥ १॥ ✓

अवधर्म बिन वि आ ग्या गदि मइत ॥ अ वति मि आ ग्या हवतः धर्म उवाव

तव धर्म आ ग्या गदी मयाः हे लक्ष्मि पाप पुण्य का कला ह रुत वत ॥ सुम

त ओइ ला मयोः यकन गर मा हा अति जतन ले आपना पुरुष कन रिस

ले हे ला का पाप ले तक टि पुष मयो ॥ पुरुष कन रिस ले हे ला का पाप ले टे हा

आ पा पुष मयोः पुरुष कन र गरि ग्या का पाप ले व हे रि मयोः पुरुष

सित उतरा दि या का पाप ले ला टि ज मयोः स्वामि परि चार लाइ न रे का इला

या का पाप ले सु मदे ला या का पाप ले उपा पुन ल म मा हा र व र

या कि कुकु मइ जतन हो लाः स्वामि को म नो नो मा नि पुने का

नमो

ॐ हं गायको पापले जाहो जा ति दुषिहा ति: या त श्री धर्म स वा दो ता
 ति यो ध्या य ॥ धर्मो वा वः ॥ धर्म धर्म ॥ हे लक्ष्मि चर्म क्त क्त
 सा क तन्हु सुं न ह्व र अ धि जन का आ प नु स्वा मि दे पि अर्को धर्म
 आ धिनः ॥ समस्त देवता समर्थ तिथी समस्त दान समस्त पुण्यः सर्व धर्म
 मि भक्त भयाः तस कार त ले पु त्रि ज न ले स्वा मि को से वा वहु ते ग र्द ॥ दि
 ति य का सा धर्म अ धि ज न ले द आ सा दे पि अर्को धर्म आ धि ए अ धि
 न ले कु वित्त न निक न वि र ना पु रु ष क न ले पा व ए मा न

व द्रो पा त क क्त ॥ इ ति ज्ञा नि क ए स्वा मि से वा वहु ते ग र्द ग र्द ॥ य स
 पु स ले इ ह लो क मा हा प नि प र लो क मा हा प निः व डि भा ग्य मा
 नि ज न्म अ भे मा ति पु त्र व ति ॥ सु ष व ति ध त व ति गु ण व ति प स व ति ध र्म
 व ति ॥ इ ति सं यु क्त म दुर ह नुः य ति न निक न अ धि ज न ले वहु ते ग
 रि आ प ना स्वा मि को से वा ग र्द भ क्ति ग र्द ॥ य ति श्री ला क्शि ध र्म
 ॐ सं वा दो ना स व नु ध्या य ॥ ४ ॥ श्री धर्मो वा वः ॥ पु र न क क्त

एककथाहाधर्मलिलस्मिन्नि-याज्ञागया॥हेलस्मिन्केहिगुणप्राप्ति
हुनावल्यउपसनेतनुवाञ्छिकन॥श्रीकृष्णठारिकनसुदतनरि
दानदेला॥एसकाधर्मलेस्वर्गलाभलोला॥कोहिमनुष्यजु
ईदामकेहिवसुलिकनेकन्यादानदेला॥येहिपापालेसुखल
जन्ममाहुतिर्नपला॥केटीलेसातजन्मकमारिभैकनसेवागुणम
कोहिमनुष्ययोक्थाहाज्ञानिकनजवानिप्रतिपालनगर्दहतब्राह्म
णसहस्रभोजनगोदानदियाकोपुन्यपावला॥यतिजातिधर्म
मर्त्यापरमज्ञारिहोला॥पंरिउतहोले॥इतिश्रीनक्षत्रसंवादि

नामपंचमोधाय॥५॥ ॥धर्मोवाच॥पूर्वजन्ममागयाकोपाप
रहिजन्ममाहाहादेषाहापछी॥सुनवोयाकोपापलेसरिरमाहाष
ठीराहुन्छ॥लोहोवोयाकापापलेगोरुकोजन्महुन्छ॥कासो
वोयाकापापलेवहिराहुन्छ॥पोथिसास्रवोयाकापापलेला
घाहुन्छ॥कपासवोयाकापापलेकोदिकोजन्महोला॥देवगु
हनिदागयाकापापलेगुराविंघानजान्यारेगिहोला॥मनु
ष्यकोनिंदागयाकापापलेहरिदिहोला॥स्यजोग्यगुण
गयाकापापलेआयुकोद्वेदहोला॥परायाकोद्वेदवकलि

गरिनासमयाकापापलेप्रपुत्रिमइतिसनामहे ॥ इति क
पापनगरिपुन्यगर्नुइहलोकमाहाभुषसंपत्तिपरतः ॥ १ ॥
त्वर्गतामलोला ॥ ॥ इति श्रीलक्ष्मिधर्मसंवादेनामषष्ठमोऽध्यायः ॥
श्रीसम्बत् १८६९ साल वैत्रशुदि ३ रोज ३ श्रीतर्कागालयामति
वितं श्रीइदुविरषकाभुभंम् ॥ ॥ शुभमस्तु ॥ ॥ यादसंपु
स्तकंदष्टातादसंतिवितंमया ॥ यदिशुद्धीमशुद्धीवाममये
षोनदियेते ॥ १ ॥ ॥ नमोऽस्तितिरासिगंगातिरेकसाम्प्रवितं

वधनरकपुष्पंगुरुवैडितंपुत्रितंसर्वदेवं ॥ नमोऽस्तकटाकष्टरनिभुमां
ति ॥ १ ॥ नमोऽस्तितिरासिगंगातिरेकसाम्प्रवितं ॥ १ ॥ नमोऽस्तितिरासिगंगातिरेकसाम्प्रवितं ॥ १ ॥
मिर्गतागुनरुपवरति ॥ नमोऽस्तकटाकष्टरनिभुमांति ॥ १ ॥ नमोऽस्तितिरासिगंगातिरेकसाम्प्रवितं ॥ १ ॥
इंसंगलेरुडमात्मासदागर्जितंमिमिकुण्ठायातं ॥ सदाभेदितंमहि
रेव ॥ नमोऽस्तकटाकष्टरनिभुमांति ॥ १ ॥ नमोऽस्तितिरासिगंगातिरेकसाम्प्रवितं ॥ १ ॥
मातातमोऽस्तितिरासिगंगातिरेकसाम्प्रवितं ॥ नमोऽस्तकटाकष्टरनिभुमांति ॥ १ ॥ नमोऽस्तितिरासिगंगातिरेकसाम्प्रवितं ॥ १ ॥
नमोऽस्तकटाकष्टरनिभुमांति ॥ १ ॥ नमोऽस्तितिरासिगंगातिरेकसाम्प्रवितं ॥ १ ॥

कोकिलाकं वनरूपवर्ति॥ तदा तत्र विषयसंश्रुतवारकरति॥ न
नकरसुखरतमुमानि॥ ५॥ इदं पं वरुं पदप्राप्तुकाहरेत्याप
मस्याना॥ तदा दुषमेकष्टमेष्टपाल॥ नमोसंकपकष्टहरे निम्न
॥ ६॥ तुहिसंकटे जोगितिजोगतिजोगवारं॥ तुहिकाभितिकामरापेत्तुहि
भाताकरषप्रधारं॥ नमोसंकपकष्टहरानिमुमानि॥ ६॥ इति श्रीकासिच
डेव्यद्व्यासविरचितं संकपीश्वरो वसुमाप्रसंपुर्णसुमम् ॥ ६॥ = = =

चित्तिश्रीरागरामकलिः दुदुतसुखगालिविद्रवतवोलिफिदैवतमाप्ति॥ ७
वकतंतयनादुडेइसदिसस्यामदेषैकतनादिसुदरमेरेलालवदनदेखिलो॥ १॥ दुवा
बंदनग्रगरकुमकुमः हेमावस्त्रपहिराये॥ सकलविद्रवतसकलषवितायेत
धिरगतपैला ने सुदरमेरेलालवदनदेखिलो॥ १॥ नमुनाटुताइप्रडुलितन
दुष्यकितगतग्रसुखे॥ बंदनवाहुसूर्यकिरतिउदयेतदुतातिरुमरिभारि
येतदर॥ ३॥ सपुनमेत्यासुदरप्रगमयेहेतवनिविष्टेअदलीये॥ ३॥
तहिदयकुवमदनकासमदनगतितये॥ तुदरा॥ ४॥ हिंदियाविर
याकुमरहेकामितिवेनजाये॥ नइयापिदुखिरेरमेरा
रमिजिजीवपकुतावेत्तुदरमेरेलालवदनदेखिलो॥ ४॥

सो गिपा लंगल तव की न कुं जा को २ ॥ १ ॥
 वडै वडु का ला जो रि युध गम दा न सु ग म श्री मा न गि पा ल ॥ २ ॥
 तः स दाल प टा हिरा म टा ध्या न धरै ॥ ३ ॥ त र को रि त म र म र म र म र
 गि पा ल ग म ॥ १ ॥ क उ ल व कुं ल को क षि कि यो त व पा ड वा म् ॥ ४ ॥ ग म क
 डारे को डि दि यो वो दि स य न ल त रैः पु ष्प त्रि व व वै स ष पा ड क म
 मे ग म्भु त्रा व ल ष ष उ षा लि पा त ल ल ष पा ड क मारै ॥ ५ ॥ त य र ष
 ति हा म य म्भु त्र चा की वि क ग रै म्भु त्र द्वा वि गा

म क स ति श्री ॥ श्री म त पं क रं वि ६ ॥ १ ॥ त र को रि त म र म र म र म र म र
 त र वि ष पाल व र्णाः प्रे त वि पा ल म्भु त्रा ॥ २ ॥ प्रा ण द्यु म्भो त ल कु व र सु र ग म
 म नि कौ तु मः स्वा मि स कि ध र म्भु त्रा श्री ली ग ल ध रैः कु व र डो मं ग लं ॥ ३ ॥
 मं ग ल सि धु स र सो ति सु त्र म नो गो दा व रि ति मी द का वे रि स म्भु त्र म दि र म
 याः द म्भो डि ते वे दि का वि प्रो वि त्र व ति मी द स र व दि षा त व म्भु त्र कि र म
 पु ण्ण ल ने न म्भु त्र स ति ता कु र्व तु द्ये मं ग लं ॥ ४ ॥ पि र डी रु वि द म्भु त्र
 भा रा व र्ण ते कु लो सा त र प न व द्यु प वि वि माः त्रो ति पु क्का को त र
 क्पी र म लो द्यु स द्यु नि दि ने दे क त मा सा व र्ण त सा को लो रा
 म्भु त्रो प र्ण फा ति मा ॥ ५ ॥